(घ) व्यवहार के विश्लेषण के प्रकार (types of Analysis of Behaviour): पारस्परिक क्रिया (Interaction) के समय व्यक्तियों के व्यवहारों का स्वरूप क्या होगा, इसकी जानकारी के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि उस व्यवहार को उत्पन्न करने में किन कारकों का साथ होता है (factors) या निर्धारकों (determinants) का साथ होता है। इस बात की जानकारी हो जाने के बाद पारस्परिक क्रिया (interaction) में भाग लेने वाले व्यक्तियों के व्यवहार के सम्बंध में भविष्यवाणी (Prediction) करना संभव हो सकता है। सेकर्ड तथा बैकमेन (1974) ने पारस्परिक क्रिया अथवा इसमें भाग लेनेवाले व्यक्तियों के व्यवहार के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए इसका विश्लेषण (analysis) निम्नलिखित तीन तंत्रों (System) में किया है।

1. व्यक्तित्व-तंत्र (Personality System): व्यवहार का एक मुख्य निर्धारक व्यक्तित्व तंत्र है। Interaction के समय किसी व्यक्ति का व्यवहार कैसा होगा, यह बात उस व्यक्ति के व्यक्तित्व-तंत्र पर निर्भर करती है। अन्य बातें समान होने पर भी व्यक्तित्व तंत्र में अंतर होने के कारण, पारस्परिक क्रिया में भाग लेने वाले व्यक्तियों का व्यवहार भिन्न हो जाता है।

व्यक्तित्व तंत्र के अंतर्गत व्यक्तित्व शीलगुणों (Personality traits), संज्ञानों (Cognitions), आदतें (habits) आदि की गणना की जाती है। यहाँ यह बात याद रखना चाहिए कि व्यक्तित्व तंत्र वास्तव में सभी कारकों अथवा चरों (variables) का योगफल (Sumtotal) नहीं है, बल्कि एक विशेष संगठन (organization) है। इस संगठन के कारण प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व एक अपूर्व तंत्र (uniquesystem) के रूप में काम करने लगता है।

(ii) सामाजिक तंत्र (Social System) :-

पारस्परिक क्रिया के समय होने वाले व्यवहार के विश्लेषण का दूसरा आधार सामाजिक तंत्र है। इसका कारण यह है कि व्यक्तित्व के समान रहने पर भी सामाजिक तंत्र में भिन्नता होने पर, दो व्यक्ति का व्यवहार एक दूसरे से भिन्न बन जाता है।

सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत एक व्यक्ति की सामाजिक भूमिका दूसरे व्यक्तियों से भिन्न नही होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी सामाजिक व्यवस्था के भिन्न-2 व्यक्तियों की सामाजिक भूमिकाओं की एक जाली बन जाती है, जिसे सामाजिक तंत्र (Social System) कहते हैं। जैसे:- परिवार (family) एक सामाजिक तंत्र है, जिसमें पति, तथा पत्नि बच्चें, तथा, पिता, माता तथा बच्चें, भाई तथा बहन आदि की सामाजिक भूमिकाओं का एक निश्चित जाल पाया जाता है। इसी प्रकार जेलखाना (prison), मठ (monastery), अस्पताल, स्कूल (school) आदि सामाजिक तंत्र के उदाहरण हैं।

(iii) सांस्कृतिक तंत्र (Cultural System) :- Interaction (पारस्परिक तंत्र) तथा सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण का तीसरा तथा अंतिम आधार सांस्कृतिक तंत्र है। पारस्परिक क्रिया के समय होने वाले व्यवहार के मूल्यांकन के लिए व्यक्तित्व तंत्र (Personality System) तथा सामाजिक तंत्र के साथ-2 सांस्कृतिक तंत्र का उपयोग करना आवश्यक है।

प्रत्येक संस्कृति के अपना एक निश्चित मूल्य, परम्परा, रीति-रिवाज, विश्वास (beliefs), मापदंड (norms) होते हैं। इन्हें हम सांस्कृतिक प्रतिरूप (culture pattern) कहते हैं। इनका गहरा प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार तथा पारस्परिक क्रिया (Interaction) पर पड़ता है। अतः व्यक्ति के व्यवहार या पारस्परिक क्रिया

को उस संस्कृति के प्रतिरूपों (Patterns) के आलोक में समझना आवश्यक है। सांस्कृतिक मूल्यों में अंतर होने के कारण ही कोई व्यक्ति एक हाथ उठाकर, कोई दोनों हाथ उठाकर, कोई सर झुकाकर और कोई जिभ निकालकर एक दूसरें का अभिवादन करते हैं। सांस्कृति मूल्यों में अंतर होने के कारण ही भारतीय पत्नियाँ अपने पति को पतिदेव समझकर उसके साथ व्यवहार करती हैं। जबकि अमेरिका में पत्नियाँ केवल सेक्स साथी (Sex Partner) समझकर व्यवहार करती हैं।

इसी तरह भूमिका-तनाव (Role strain) को समझने में भी सांस्कृतिक तंत्र (cultural system) से मदद मिलती है। जिस संस्कृति में भूमिका असमानता (inequality) अधिक होती है, वहाँ भूमिका तनाव अधिक होता है। जैसे:- सैनिक सेवा में भिन्न-2 कोटियों (ranks) के बीच सम्बंधों में असमानता के कारण एक विशेष प्रकार का भूमिका तनाव उत्पन्न होता है। भारत में भिन्न-2 वर्गों, जातियों तथा सम्प्रदायों के बीच असमानता कारण भूमिका-तनाव को इस तरह बढ़ा दिया है कि भारत की अखंडता खतरे में पड़ी दिख रही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पारस्परिक क्रिया (interaction) अथवा सामाजिक व्यवहार को सही रूप में समझने के लिए आवश्यक है, कि इसका विश्लेषण व्यक्तित्व तंत्र (Personality system) सामाजिक तंत्र (Social System) तथा सांस्कृतिक तंत्र (cultural System) के आलोक में किया जाए। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, तथा मानवशास्त्र (anthropology) का सम्बंध व्यक्तित्व तंत्र, सामाजिक तंत्र तथा सांस्कृतिक तंत्र से है। लेकिन समाज मनोविज्ञान का सम्बंध एक साथ इन तीनों तंत्रों से है। इसका कारण यह है कि समाज मनोविज्ञान में जिस पारस्परिक-क्रिया (interaction) या व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, वह इन तीनों तंत्रों का परिणाम होता है।

— o —